“इक्कीसवी सदी के हिंदी और मराठी दलित कविता का तुलनात्मक अध्ययन (इ.स.2001 से अब तक)"

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोधप्रबंध की रुपरेखा

शोधकर्ता

सविता विश्वनाथ साळवे

एम.ए. (हिंदी), एम.फिल, नेट

शोधनिर्देशक

प्रा.डॉ.विश्वनाथ किशन भालेराव

एम.ए. (हिंदी), एम.फिल., पीएच.डी., नेट

सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागप्रमुख

शिवाजी महाविद्यालय, उदगीर जिला लातूर

अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

अगस्त - 2023

“इक्कीसवी सदी के हिंदी और मराठी दलित कविता का तुलनात्मक अध्ययन (इ.स.2001 से अब तक)"

प्रास्ताविक :

हिंदी दलित साहित्य का प्रारम्भ कविता से हुआ है। हिंदी साहित्य में 1990 के बाद से दलित साहित्य की शुरुआत मानी जाती है। दलित लेखकों ने अपने अनुभव, और विचार रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किए। दलित लेखकों की विचारधारा पर महात्मा गौतम बुद्ध, कबीर, रविदास, महात्मा ज्योतीबा फुले एवं डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर के विचारों का प्रभाव दिखाई देता है। हिंदी साहित्य में दलित लेखन का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान माना जाता है। कई शताब्दियों से चली आयी धार्मिक व्यवस्था को पहली बार निर्गुण संतों ने सामाजिक स्तर पर चुनौती दी थी। मध्युग में अनेक संतों ने जाति, धर्म, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मानवता की अभिव्यक्ति की थी। कविता साहित्य की प्रथम विधा है। दलित कविता में देखा जाये तो अत्याचार, शोषण, छुआछूत, उच्च वर्गों द्वारा उनका शोषण आदि विषय प्रमुख रहे हैं। हीरा डोम की भोजपुरी कृति 'अछूत की शिकायत' यह हिंदी की पहली कविता मानी जाती है। सन 1914 में यह 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। आठवें और नवें दशक में हिंदी में दलित कवियों की एक पूरी पीढ़ी तैयार हो चुकी थी। ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, मलखान सिंह, श्यौराज सिंह बेचैन आदि की कविता में स्वतंत्रता, लोकतंत्र, राजनीति, समाजवाद, प्रगतिवाद, जनवाद आदि को प्रस्तुत किया गया है। लेकिन इक्कीसवी सदी में ऐसे अनेक कवि हुए हैं उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा सामाजिक विषमता के साथ-साथ समा की पीड़ा को व्यक्त किया है।

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में सामाजिक सरोकारों का विकेंद्रीकरण हो रहा है। ऐसे में दलित साहित्य अपनी सर्जनात्मक क्षमता को वैश्वीक स्तर पर सिद्ध करने

की कोशिश करता हुआ नजर आ रहा है। नई पीढ़ी के कवियों में जब देखा जाता है तो उनकें दलित संवेदना, सरोकारों के लिए उल्लेखनीय कार्य दिखाई देता है। लोकतंत्र, सरकार, राजनीति, समाजवाद को लेकर उनकी कविताएँ बोलती हुई नजर आती है। वर्णवाद का विरोध तो उनकी कविताओं में दिखाई देता ही है साथ ही समाज में दोयम स्थान को नकारकर अम्बेडकरी विचारों से प्रभावित होकर अपने होने का एहसास भी उनकी कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया गया है। जैसे; मलखान सिंह, विहाग वैभव, रजनी तिलक, असंग घोष, जयप्रकाश लीलावान, ओमप्रकाश वाल्मीकि, सुशीला टाकभौरे, दिनेश कुशवाह, विपिन बिहारी आदि की कविताएँ सामाजिक बदलाव का आवाहन करती है। इनकी कविताओं में आक्रोश है, गुस्सा है, संवेदना है, व्यवस्था को बदलने की पुकार है और मानवीयता है। अपने ही देश में बेगाने वाली स्थिति विहाग वैभव की कविता 'यह कविताओं को खेतों में जोतने का समय है' और ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'ठाकूर का कुआँ' में दिखाई देती है।

विहाग वैभव की कविता:

"असीम पुरातन घृणा की जायी
देश की सरकारने
मेरे पाठकों और विरोधियों और नागरिकों से
अपने ही देश की नागरिकता के सुबूत माँगे है"

मराठी के कवियों के काव्य की तुलना करते समय निम्नलिखित कवियों के काव्य को देखा जाता है जिनमें तृष्णा, वासना, भोग, आसक्ती, राजनीति, शोषित व्यवस्था, मूलतत्त्ववादी व्यवस्था की श्रृंखला में जकड़ी गए दलित का चिंतन उनके काव्य का विषय रहा है। राजकीय अनाचार, सांस्कृतिक दहशतवाद, पुरुषप्रधान वर्चस्व आदि अविनाश गायकवाड की कविता में दिखाई देता है। उनका 'जंजाळ', 'अजूनही अस्वस्थ रोहिणी' काव्यसंग्रह महत्त्वपूर्ण है। वैसे ही सिद्धार्थ तांबे, उत्तम अंभोरे, आनंद

गायकवाड, अरुण काळे, प्रदीप जाधव, अनिल कांबळे, केतन पिंपळापुरे, महेंद्र भवरे (चिंताकांत, मुलुखाचे रुदन, महासत्तेचे पीडादान) आदि के काव्य में जात-पात, वर्णव्यवस्था के कारण दलित व्यक्ति का दमघोटूपन दलित कविता का केंद्रबिंदू है।

तुलनात्मक अध्ययन करते समय देखा जाये तो इसका क्षेत्र बहुत ही विस्तृत दिखाई देता है। जेसे- ज्ञान का विकास, शोध प्रविधि, भाषा, व्याकरण आदि का तुलनात्मक अध्ययन अगर कोई भाषा का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा ही यह सम्भव है। तुलनात्मक अध्ययन करते समय एक से अधिक भाषाओं में रचित साहित्य का अध्ययन किया जा सकता है। भारतीय भाषाओं के साहित्य के साथ-साथ विदेशी भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है क्योंकि यह विश्व के लिए भी उपयुक्त होगा। अपने देश की संस्कृति और विदेशी देश की संस्कृति के पक्ष में जान-पहचान हो जायेगी। एक भाषा से अन्य दूसरी भाषा तक पहुँचने के लिए अनुवाद महत्त्वपूर्ण है इसके बाद हम तुलनात्मक अध्ययन कर सकते है। तुलनात्मक अध्ययन से मानवीय क्रिया के सभी क्षेत्रों से परिचित किया जा सकता है। भाषा और साहित्य का अगर पारस्पारिक सम्बन्ध स्थापित करना है तो यह तुलनात्मक पद्धति महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। हिंदी और मराठी दलित काव्य का तुलनात्मक अध्ययन करते समय यह स्पष्ट होता हे कि, हिंदी की अपेक्षा मराठी में प्रथम काव्य रचना हुई फिर बाद में आविर्भाव हिंदी में हुआ।

हिंदी और मराठी कविता में अस्पृश्य होने के कारण भोगी हुई वेदना, अपमान, पीड़ा और संघर्ष का निरुपण मुख्य रूप से किया गया है। दलित साहित्य की निर्मिति विद्रोह और क्रांति से हुई है। समाज के भीतर गहरे विश्वास का भाव इसी साहित्य ने जगाया है। इसीलिए हिंदी और मराठी दलित साहित्य मुक्ति का साहित्य कहलाता है। दलित कविता, जातिविहिन समाज की संकल्पना को दृढ़ता प्रदान करता है। आज भी

अस्पृश्यता का बोलबाला है जहाँ स्टेज पर बड़े-बड़े भाषण दिए जाते हैं। अस्पृश्यता का निवारण होने चाहिए लेकिन असल में कुछ होता नहीं है। मैंने प्रस्तुत अनुसंधान के लिए मराठी के कवि अरुण काले, अविनाश गायकवाड, उत्तम अंभोरे, सिद्धार्थ तांबे, अनिल गायकवाड, प्रदीप जाधव, अनिल कांबळे, केतन पिंपळापुरे आदि कवियों की कविताओं को चुना है तथा हिंदी के मलखान सिंह, रजनी तिलक, ओमप्रकाश वाल्मीकि, नवेंद्र महर्षि, विहाग वैभव, असंगघोष, जयप्रकाश लीलावान, पराग पावन आदि का चयन किया है। उपर्युक्त हिंदी तथा मराठी कवियों की कविताओं का अध्ययन किया जाएगा।

विषय चयन की प्रेरणा:

मुझे छात्र जीवन से ही कविता के प्रति रुचि रही है। मेरे पढ़ने में हिंदी की कई कविताएँ आयी। मुझे ज्यादा रुचि दलित साहित्य के प्रति रही है। इसलिए मैंने दलित साहित्य और दलित कविताओं को सुक्ष्मता से पढ़ा। मैंने ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, कँवल भारती, जयप्रकाश कर्दम, एन. सिंह की कविताएँ पढ़ी। इसके बाद मैंने मराठी दलित कविताएँ भी पढ़ी। नारायण सुर्वे, दया पवार, ज.वि. पवार, नामदेव ढसाल आदि को पढ़ा। इक्कीसवी सदी के हिंदी और मराठी दलित कविताओं को जब देखा गया तब ऐसा महसूस हुआ कि आज भी दलितों का दु:ख कम नहीं हुआ है। आज के कवि जागृति के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। दलित कविता में हुआ परिवर्तन और उनकी लेखनी को मिली हुई अम्बेडकरी विचारधारा कि धार किस प्रकार बदलाव चाहती है ये समझने लगी। वैश्विकरण के युग में उनकी कविता क्या परिवर्तन चाहती है इसका अध्ययन किया और इसे मैंने शोध का विषय बनाया है।

शोध विषय के उद्‌देश्य :

1) अनुसंधान के लिए चुने गये कवियों की कविता में व्यक्त दलित वर्ग के यथार्थ को खोजना।

2) हिंदी और मराठी कविता में प्रेरणा और प्रवृत्ति को खोजना।

3) वैश्वीकरण के युग में हिंदी और मराठी दलित कविता में दलित वर्ग की समस्याओं से अवगत होना।

4) हिंदी और मराठी दलित कविता का शिल्पगत अध्ययन करना।

अनुसंधान पद्‌धति :

प्रस्तुत विषय के अनुसंधान में वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक पद्‌धति का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत शोध में विषय का वस्तुनिष्ठ और तथ्यात्मक पद्‌धति से अध्ययन किया जायेगा। इसी आधार पर प्राप्त निष्कर्ष निकाले जायेंगे।

विषय की मौलिकता :

प्रस्तुत शोध के पूर्व इस शीर्षक पर किसी ने भी और कहीं पर भी अनुसंधान नहीं किया है। इस दृष्टि से प्रस्तुत विषय की अपनी मौलिकता है।

विषय की व्याप्ति और सीमा :

प्रत्येक शोधकार्य अपनी सीमा और व्याप्ति में सम्पन्न होता है। प्रस्तुत शोध के विषय को इक्कीसवी सदी के प्रमुख कवियों के काव्य तक सीमित रखा गया है किन्तु इन कविताओं का सुक्ष्म और गहराई से अध्ययन करना यह शोध की व्याप्ति है।

प्रकरण रुपरेखा

अनुसंधान की दृष्टि से मैंने इस को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है-

प्रथम अध्याय : तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप एवं अवधारणा

1.1 तुलनात्मक साहित्य की व्युत्पत्ति

1.2 तुलनात्मक साहित्य का अर्थ

1.3 तुलनात्मक साहित्य स्वरूप

1.4 तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा

1.5 तुलनात्मक साहित्य के पोषक तत्त्व

1.6 तुलनात्मक साहित्य का विकास

द्वितीय अध्याय : दलित कविता का स्वरूप एवं संवेदना

2.1 दलित कविता का स्वरूप

2.2 दलित कविता की व्युत्पत्ति

2.3 दलित कविता का स्वरूप

2.4 दलित कविता की परिभाषा

2.5 दलित कविता के पोषक तत्त्व

2.6 दलित कविता का विकास

2.7 दलित कविता में व्यक्त संवेदना

तृतीय अध्याय : हिंदी और मराठी दलित कविता का उद्‌भव और विकास

3.1 हिंदी दलित कविता का उद्‌भव और विकास

3.2 मराठी दलित कविता का उद्‌भव और विकास

चतुर्थ अध्याय : हिंदी और मराठी दलित कवियों का परिचयात्मक अध्ययन

4.1 परिचयात्मक अध्ययन

4.2 दलित कवियों का कृतित्व एवं व्यक्तित्व

4.1.1 मलखान सिंह

4.1.2 विहाग वैभव

4.1.3 कँवल भारती

4.1.4 असंगघोष

4.1.5 जयप्रकाश लीलवान

4.1.6 ओमप्रकाश वाल्मीकि

4.1.7 सुशीला टाकभौरे

4.1.8 पराग पावन

4.1.9 दिनेश कुशवाह

4.1.10 सौरभ राय

4.1.11 शांति यादव

4.3 मराठी दलित कवियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

4.3.1 अरुण काळे

4.3.2 अविनाश गायकवाड

4.3.3 उत्तम अंभोरे

4.3.4 सिद्धार्थ तांबे

4.3.5 आनंद गायकवाड

4.3.6 प्रदीप जाधव

4.3.7 अनिल कांबळे

4.3.8 केतन पिंपळापुरे

4.3.9 महेंद्र भवरे

पंचम अध्याय : हिंदी और मराठी दलित कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन

5.1 सामाजिक जीवन की तुलना

5.2 राजनीतिक जीवन की तुलना

5.3 धार्मिक जीवन की तुलना

5.4 आर्थिक जीवन की तुलना

5.5 अस्पृश्यता-छुआछूत की तुलना

5.6 दलित स्त्री-पुरुष की तुलना

5.7 विद्रोही जीवन

5.8 शिक्षा

5.9 संघर्षमय जीवन

5.10 सांस्कृतिक तुलना

षष्ठम अध्याय : हिंदी और मराठी दलित कविता का शिल्पगत अध्ययन

6.1 शिल्प शब्द की व्युत्पत्ति

6.2 शिल्प का स्वरूप

6.3 शिल्प का अर्थ

6.4 शिल्प की परिभाषा

6.5 शिल्प के तत्त्व

6.6 काव्य शैली

सप्तम अध्याय : निष्कर्ष/उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय में सभी अध्यायों का अध्ययन कर निष्कर्ष दिए जायेंगे और संदर्भ ग्रंथों की सूची दी जाएगी।

अ) मूल ग्रंथ

ब) आधार ग्रंथ

क) पत्र-पत्रिकाएँ

ड) कोश

इ) इंटरनेट

संदर्भ

1) हिन्दी दलित कविता और मराठी दलित कविता का तुलनात्मक अध्ययन और दलित आंदोलन पर उनका प्रभाव-ओमप्रकाश वाल्मीकि, पर्ल ऑफसेट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2015

2) भारती साहित्य एवं दलित चेतना-डॉ.धनंजय चौहाण, डॉ.धीरज भाई वणकर (संपा.), ज्ञान प्रकाशन, कानपुर, 2010

3) समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन- रजनी तिलक, रजनी अनुरागी (संपा.), स्वराज प्रकाशन,नई दिल्ली, 2011

4) स्वाती बँद और खारे मोती-सुशीला टाकभौरे, शरद प्रकाशन, नागपुर, प्रथम संस्करण 1993

5) बिना किसी भूमिका के-रजनी अनुरागी, आरोही प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011

शोधकर्ता

सविता विश्वनाथ साळवे

शोधनिर्देशक

प्रा.डॉ.विश्वनाथ किशन भालेराव

एम.ए. (हिंदी), एम.फिल., पीएच.डी., नेट

सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागप्रमुख

शिवाजी महाविद्यालय, उदगीर जि.लातूर